षष्म् अध्याय
विदेशों में स्थित प्रमुख शक्तिपीठः

‘सर्वस्म्यकाये देवी सर्व देवीमयं जगतु’ – वैसे तो यह सम्पूर्ण संसार की देवीमय है, सृष्टि के कण-कण में उन्हीं आदायकित्त जगन्मयी जगात्मका का निवास है, परन्तु कुछ विशिष्ट स्थल दिव्यक्षेत्र ऐसे भी हैं, जहाँ देवी विन्यस्त रूप से विराजमान हैं और उनकी इसी सूक्ष्मति के कारण वे स्थान भी विश्वस्मय हो गये। शक्ति के इन्हीं स्थलों को शक्तिपीठ कहा दी गयी है। एक पौराणिक आद्यान्तिका के अनुसार देवीदेवी के अंगेरे से इनकी उत्पत्ति हुई, जो भगवान् विष्णु के चक्षु से विछिन्न होकर ५७ स्थलों पर मिरे थे। इन ५७ शक्तिपीठो में से कुछ स्थान भारत से बाहर विदेशों में विराजमान हैं, जिनमें श्रीलंका का “लक्ष्मीकाश्चिंतिपीठ”, तिब्बत का ‘मानसशक्तिपीठ’, पाकिस्तान का “हिंगला शक्तिपीठ”, नेपाल के “गण्ड” एवं “नेपाल” शक्तिपीठ, बंगालदेश के “बयशोर, चढ़द्व”, “करलोयालट” एवं सुगन्ध्या शक्तिपीठ शामिल हैं। यह बात सत्य है कि तीर्थंकरों तो भारत ही है।

‘भारत’ शब्द का अर्थ आज का विभाजित भारत नहीं है। पवनिर्भरत भूमि का ही एक भाग पाकिस्तान बन गया है, यह बात आज सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है, वैसे ही नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बंगालदेश तथा तिब्बत का वैशाल-प्रदेश भारत के ही भू-भाग है।

इन क्षेत्रों भ्रमण के ही हैं। इस पवित्र भारतभूमि से बाहर प्राचीन “हिन्दू-तीर्थ” नहीं हैं; किन्तु समस्त पृथ्वी पर जो मनुष्य जाल निवास करती है, उसके इतिहास का अन्वेषण करने से यह विदित होता है कि आयुर-वैदिक धर्म के अनुयायी ही समुद्र किन्हं ये बसे थे। मनुष्यमान एक ही धर्म था – “सनातन वैदिक धर्म”। भारतमूलम से उसकी सत्तान जितनी दूर होती गयी, उसके खान-पान, रहन-सहन में उतने ही परिवर्तन आते गये।

9. ततो विष्णुमहावाहुःहुः परिपालकः।
व्यासस्वर्य शरीरः स पातालमायामेव खण्डः।
सुदार्शिन चक्षुण महाभारते इवेश्वरतु।
- देव पु १७७/१७५-१७७
होने पर भी अंत दीर्घकाल तक विश्व के प्रायः प्रत्येक भाग का मनुष्य स्वयं को श्रुति का अनुयायी मानता रहा एवं पुराणप्रतिपादित देवताओं में से अनेकों की आराधना करता रहा। भारत से दूर होने के कारण, शास्त्रमयावत् के सर्वशक् ब्राह्मणो की अप्राप्ति तथा देश-विदेश की परिस्थितियों के कारण मानव की मान्यताएँ तथा रहन-सहन परिवर्तित होते रहे।

शक्तिमत का अस्तित्व अंति प्राचीन होने के कारण एवं उसका प्रसार भारत के सम्पूर्ण भाग में होने के कारण उस पर प्राचीन समय से ही ग्रन्थों की रचना होती लग गई थी। शक्तिमत यद्यपि भारत की मूल धर्म शाखा है, तथापि कालांतर में उसका प्रसार बंगालदेश, नेपाल तथा तिब्बत में भी वहुप्रचलित धर्म के रूप में हुआ। इसलिए शक्तिमत का अधिकार सहित्य या तो तिब्बत में पाया जाता है अथवा वस्तुलिखित ग्रन्थों के रूप में अप्रकाशितवस्था में है। कालक्रम से वह निरंतर नष्ट होता रहा। भारत की सीमा के साथ लगाते वाले कई देशों में वैदिक सनातन धर्म के अन्तर्गत देव-पूजन परम्परा का प्रचलन आज भी मुख्य रूप से प्रचलित है। इन देशों में प्राचीन भारत के अनेक तीर्थ-स्थल विद्यमान हैं। उनमें से कुछ भगवती सती के अद्भुतों से निर्मित महाशक्तिपीठ हैं। यहे वे नेपाल में हो तथा तिब्बत के केलाशपर्वत पर, पाकिस्तान में हो या बंगालदेश में, किसी न किसी प्रकार से मानव समाज को आज भी अपना योगदान दे रहे हैं।

तिब्बत का मानस शक्तिपीठ:

केलाश’ पर्वत जहाँ हिम शिवलिङ्ग के रूप में साकातु भगवान् शिवस्तोश दृष्टिगोचर होता है; वहीं मानसरोवर उत्कृष्ट शक्तिपीठ के रूप में विराजमान है。

9. (क) भगवान् शिवकर का निवास स्थान।
   - श्रीमद्रभगवत ४/६

(ख) देवता, सिद्ध तथा महादेवों का निवास स्थान।
   - देवी भगवत २५/१६/२२

(ग) स्कन्दपुराण काशीखण्ड अ० ३२ तथा हरिवन्द पुराण अ० २०२ (दक्षिणपथ पाठ) में इसका भगवान् विष्णु के नामित्य से उत्पन्न होना वर्णित है।
जहाँ पर सतीदेस के दाहिने हाथ की हथेली गिरी थी। इस स्थान पर भगवानू शिव ‘हर’ भेरव के रूप में विराजमान हैं। यहाँ के शक्तिपीठ की देवी का नाम ‘कुमुदा’ है - “मानसे कुमुदा प्रोक्ता।” तन्त्रचूँद्रामणि नामक प्रस्तुति में वर्णित किया गया है कि मानसरोवर की पवित्र भूमि पर स्थित शक्तिपीठ में सर्वसिद्धद्रा भगवती ‘दाक्षायणी’ एवं भेरव ‘अमर’ विराजमान हैं -

मानसे दशहस्तो में देवी दाक्षायणी हर।
अमरो भेरवसत्र सर्वसिद्धप्रदायक।।

जैन, बौद्ध एवं हिंदू धर्मग्रन्थों में मानस शक्तिपीठ मानसरोवर का गौरवमय वर्णन पाया जाता है। हिंदू धर्म ग्रंथ मानसरोवर का मानससर, बिन्दुसर, मानसरोवर अन्तर्गत सर्वत्र दिखायी दिए गए हैं। तथा उसके टूट श्रद्धाग्राहक रखते हैं। सूक्तिकार ब्रह्मा के मन द्वारा निर्मित होने से इस सरोवर का नाम मानससर अथवा मानसरोवर पड़ा। बालभक्षी रामचरिणी में इस बात का उल्लेख प्राप्त होता है -

कैलासपर्वते राम मनसा निर्मित परसु।
ब्रह्मणा नरशार्दूल तेजेद मानसं सरः।।

इसी ग्रंथ में अन्यत्र कहा गया है कि राजा मान्धाता ने इस सरोवर के तट पर दीर्घकाल तक उकट तपस्या की थी, अतः इस का नाम मान्धाता के नाम से मानसरोवर पड़ा।

9. (फ) मानसं भेरवनवीय यथा विशेष्वरो हर।
भूतकरणप्रस्तुति चर्चा कर्तकता॥
- यो० तन्त्र, २/९/३८
(ख) आर अहं दानी हस्त मानसरोवरे।
देवी दामापर्वी हर भेरव चिहए॥
- अन्नामदण्डला, भरतचन्द्र वंगवासी पु० ४६

2. मल्ल ग्रंथ - १३/९५; देवीभागवत ५/३०/५६

3. (फ) पाण्डुलिपि संख्या ९५६, ३३००, ५३०३, महापीठनिष्ठ न र गवरनम् Collection of the Royal Asiatic Society of Bengal.
(ख) तन्त्रचूँद्रामणि, पीढिनिष्ठ, श्लो० ७२

4. बालभक्षी रामचरिणी ९/२४/२-४
एक जनशृंखल के अनुसार झापर्युग में एक चक्रवर्ती राजा ने केलास के समीप महावशा का भव्य आयोजन करवाया था। मानसरोवर की भूमि में बहाकुण्ड था। उसमें पूर्णांकृति के पश्चात् जल का फूड़ा फुटा तथा कुछ दिनों में वहाँ पर विशाल जलभण्डार ‘मानसरोवर’ बन गया।

मानसरोवर परम तीर्थस्थल है एवं उसमें स्नान करने वाला स्त्र्यालूक जाता है। वाल्मीकि रामायण में वर्णन आता है कि मानसरोवर शक्तिपीठ में शिव हस्त रूप में विहार करते रहते हैं। पुराणों में ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है कि ब्रह्मा के मन द्वारा निर्मित मानसरोवर के दर्शनमात्र से दर्शनार्थी के पापों का नाश हो जाता है तथा उसमें स्नान एवं उसके पवित्र एवं मधुर जल का पान करने से ब्रह्मालोक की प्राप्ति होती है तथा भगवत शाक्तिवत “कुमुदा” की असीम अनुक्रम प्राप्त होती है और उसका आवागमन भित्त जाता है। जो साधक इस पवित्र शक्तिपीठ में साधना हेतु निवास करता है उसे युग के अन्त में पार्श्वदे एवं पार्श्वी सहित इवानुसार रूपों धारण करने वाले भगवान शब्दकर का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। इस सरोवर के तट पर चैत्रमास में जो भक्तजन अनेक प्रकार के यहाँ द्वारा परिवार सहित पिनाकदारी भगवान शिव की आराधना करते हैं उनकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

मानसरोवर अत्यन्त सुंदर, शान्त एवं आनंद से परिपूर्ण है। उसका जल स्फटिक सांस्कृतिक स्वच्छ, मधुर, सिंगह एवं सुपाव्य है। मानसरोवर की पवित्रतम भूमि शक्तिशाली युग्म आन्दोलनों से सतत विकासपूर्वक रहती है, जो प्रतीत करती है कि इस स्थान पर अवश्यमें महाशक्तिपीठ है। इस सरोवर में श्रद्धापूर्वक स्नान एवं आयोजन करके पापमुक्त हुआ जितेन्द्रय पुष्प शुभ लोकों में जाता है; इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है।

9. तलो गच्छेतु राजेन्द्र मानसा तीर्थस्थलमय।
   तत्र स्नात्मा नरी राजन श्रुलोके महिमाते।।
   - महाद  वन २२
   पाठ आदि २९/८।

2. श्रीगुणे तु कीलेक शर्यस्य राह पार्श्वः।
   राहोमाया च भवति दर्शनं कामिगित्व।।
   अस्मिनं तरसि संज्ञे चैत्ये माति पिनाककिनम्।
   यज्ञो राष्ट्राः सम्यक्त परिवर्त शुभार्धिनं।।
   - महाद  वन २२ - ९३०/९४-९५।
अत्रोपसृष्ट्य सरसिः श्रद्धास्थिति जितेन्द्रियः।
क्षीणपापः सुभाष्यलौकान्तः प्राप्तुते नात्र संशयः।

बौद्धरूपांत्र्यो मौष भावधरवर
का अन्यत्त महत्त्व दर्शाया है। भगवान्
बुद्ध के जन्म के साथ मानसरोवर का
महत्व सम्बन्ध कहा गया है। पालि भाषा
में लिखा हुआ, बौद्ध-ग्रन्थों में मानसरोवर
को ‘अनीतस्वर’ अर्थात् पवित्रता का सरोवर
कहा है। बुद्धदेव के समय से ही बौद्ध
लोग पवित्र-तिव्वत स्थित महातीर्थ केलास
eवं मानसरोवर की यात्रा एवं प्रदर्शण
करते थे, ऐसा प्रमाण प्राचीन दर्शनांत्र्यों से प्राप्त होता है। तिब्बती तिब्बती
दर्शन ‘कंगरीकठक’ भाषा में मानसरोवर को देवी ‘दोजी-काँमो’ (बज्रवाराही)
का निवास-स्थान माना है। इस पवित्र
सरोवर में भगवान् ‘देशमो’ भागवती ‘दोजी फांमो’ के साथ एवं दिन
में विहार करते हैं।
इस दर्शनांत्र्य में मानसरोवर को ‘त्सो-मकम’ कहा है और बताया है कि भारत देश से एक
विशाल मछली ने आकर मानसरोवर में मकम (छब आबाज) करते हुए प्रवेश किया था अतः
इस मधुर जल के महासरोवर का नाम ‘त्सो-मकम’ पड़ा गया। जैन दर्शनांत्र्यों में केलास को
अष्टापद कहा गया है और मानसरोवर को ‘पद्म’ बताया है। इस पवित्रतम सरोवर में
कत्पय तीर्थकरों ने स्नान किया था एवं उसके सुरची तट पर तपस्या की थी। एक जैन ग्रन्थ
में ऐसा लिखा है कि लड़कोपति राजशन लड़का से अपने पुष्पक विमान में बैठकर एक दिन
अष्टापद केलास एवं ‘पद्म’ मानसरोवर’ की यात्रा एवं दोनों ही तीर्थों की प्रदर्शण करने

1. महाराज बनपर्व - ३३०/३६-३७
2. मूल सबस्तिवाद, विनयदसु २५/४६
3. कंगरीकठक २५ १३३
4. देशमो देव = सुख, माचोक = महा अर्जुन भगवान शंकर
5. कंगरीकठक २५ ८५
हेतु इस पवित्र स्थान पर आया था। लक्ष्मीश रावण शक्ति का भी उपासक था; अतः उसने महाशक्तिपीठ मानसरोवर में स्नान करना चाहा, किन्तु देवताओं ने उसे स्नान करने से रोका। वह देखकर महाबली रावण ने अपने सामयिक से मानसरोवर के समीप ही एक बड़े सरोवर का निर्माण किया एवं उसमें स्नान किया, वह सरोवर ‘रावणढु’ के नाम से आभिषेक हुआ। पवित्रतम मानसरोवर का जल जिस छोटी सी नदी द्वारा ‘रावणढु’ या ‘राक्षसताल’ में जाता है, उस नदी को ‘लंगक-ल्गु’ या गड़ूगा....लु कहते हैं। ‘राक्षसताल’ से पवित्र सरचू गड़ूगा निकलती है। वह दिव्य शक्तिपीठ मानसरोवर समुद्रतल से ७७,५०० फुट की ऊंचाई पर स्थित है।

मानस शक्तिपीठ का स्थान निर्देशन:

केलाश पर्वत पर स्थित मानस शक्तिपीठ पहुँचने के लिये भारत से अनेक मार्ग जाते हैं - जैसे कश्मीर से लद्दाख होकर जाने वाला मार्ग, नेपाल से मुक्तिनाथ होकर जाने वाला मार्ग, डरमा दर्रे से जाने वाला मार्ग, गड़गोटी से होकर जाने वाला मार्ग आदि। इन मार्गों में निर्जन एवं हिमप्रदेश में अत्यधिक चलना पड़ता है। फलतः ये तीर्थयात्रियों हेतु सामान्य मार्ग नहीं है। तीर्थ यात्रियों के लिए सामान्यतः निम्नलिखित तीन ही मार्ग हैं -

१. पूर्वोत्तर रेलवे के काठगोंदम रेलवे स्टेशन से मोटर बस द्वारा अल्मोड़ा जाकर फिर पेड़ल यात्रा करते हुए ‘ऊटा’, ‘जयन्ती’ तथा ‘कुंगरी-विंगरी’ घाटियों को पार करके जाने वाला मार्ग।

२. उत्तर रेलवे के अफिकेश्त स्टेशन से मोटर बस द्वारा जोशीमठ जाकर वहाँ से पेड़ल यात्रा करते हुए ‘नीली’ की घाटी को पार करके पेड़ल जाने वाला मार्ग।

३. पूर्वोत्तर रेलवे के टाकपुर स्टेशन से मोटर बस द्वारा पिघोरागढ़ (अल्मोड़ा) जाकर फिर वहाँ से पेड़ल यात्रा करके ‘लिपु’ नामक दर्रे पार करके जाने वाला मार्ग।

पिघोरागढ़ से अस्त्रों, धारी चुलू, पोपुलाट होते हुए धानीधार (पांगु), सोसा, नाराजन -आश्रम होकर सिरदंग सिरखा, जिस्ती, मालपा, दुधी होकर गर्मियां चं गुंजी जाना होता है।

9. लंगक = राक्षस, ल्गु = नदी
है। गुरुजी से कालापानी, नवीडांग होकर हिमाच्छादित ‘लिपु’ घाटी’ पार करके पशिम तिभ्वत होते-होते हुए तकलाकोट नामक मण्डी पहुँचा जाता है। वहाँ से टोयो, रिंगुम, बलडक होकर पवित्रतम मानसरोवर या मानस शक्तिपीठ के दर्शन होते हैं।

मानसशक्तिपीठ या मानसरोवर जानेवाले यात्रियों को किसी प्रकार के आहार्य या परमित लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उपरोक्त इन तीनों ही मार्गों में यात्रियों को भारतीय सीमा तक जो अंतिम बाजार मिलता है, वहाँ तक उन्हें ठहरने के लिए स्थान, भोजन का सामान तथा भोजन बनाने हेतु बर्तन सुविधापूर्वक मिलते रहते हैं। वहाँ तक उन्हें न किसी मार्गदर्शन की आवश्यकता है और न ही कोई अन्य कठिनाई होती है। तिभ्वत सीमा में प्रवेश करने से पूर्व यात्री को तिभ्वती भाषा का जानकार एक मार्गदर्शक साथ लेना पड़ता है, क्योंकि तिभ्वत में कोई हिन्दी या अंग्रेज़ी जानने वाला कठिनाई से ही मिलता है। तिभ्वत की सीमा पर पहुँचने पर कम्यूनिस्ट चीन के सैनिक यात्रियों की तलाशी लेते हैं। पूजा-पाठ की सामग्री एवं पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य कोई भी पुस्तक, नक्शे, समाचार-पत्र-पत्रिका, दूरबीन, कैमरा, पिस्तौल जैसी सामग्री यात्री अपने साथ नहीं रख सकते।

मानसरोवर की यात्रा भारत सरकार द्वारा प्राप्त जून के महीने में करवाई जाती है। इस यात्रा में लगभग डेढ़-दो महीने का समय लगता है। अनेक संस्थाएं एवं कुछ साधु-संप्रदाय भी इस यात्रा का प्रभाव करते हैं। वे यात्रियों के रहने एवं भोजन इत्यादि की व्यवस्था सुविधापूर्वक कर देते हैं।

बंगलादेश के शक्तिपीठ :

आधुनिक बंगलादेश प्राचीन बंगाली में ही सम्मिलित था। परम्परागत रूप से यह प्रदेश शक्ति-उपासना का विशिष्ट स्थल रहा है। इस प्रदेश का सबसे महान उत्सव ‘दुर्गौरूपजा’ माना जाता है। अतः इस स्थान पर दुर्गौरूपजा के उत्सव की बड़ी हिमालास्त के साथ मनाया जाता है। तन्त्रग्रन्थों में इस प्रदेश का विशिष्ट महत्व वर्णित है। शक्तिसंगममत्रन्त्र के अनुसार यह क्षेत्र सदिशिक्षनदायक है。

9. लिपु घाटी समुद्रतल से १०,६०० फुट की ऊँचाई पर स्थित है।
रत्नाकरं समारस्य ब्रह्मपुत्रान्तं शिवे।
बंग्लादेश मया प्रोक्त: सर्वसिद्धिप्रदर्शक।।

बंग्लादेश में चार शक्तिपीठों की मान्यता है - करतोयालट शक्तिपीठ, चट्टल शक्तिपीठ, विभाप शक्तिपीठ एवं सुगन्धा शक्तिपीठ। इनमें से करतोयालट शक्तिपीठ का विशेष महत्व है। इन शक्तिपीठों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है -

करतोयालट शक्तिपीठ:

बंग्लादेश के शक्तिपीठों में प्रसिद्ध ‘करतोयालट शक्तिपीठ’ में देवीदेह के ‘वाम तल्प’ का पतन हुआ था, जिसके कारण यह स्थान शक्तिपीठ के नाम से विख्यात हुआ। यहाँ देवी सती ‘अर्पणा’ रूप से तथा भगवान शिव ‘वामन’ भैरव रूप से निवास करते हैं -

करतोयालटे तल्प वामन भैरवः।
अपरणा देवता तत्र ब्रह्मरूप करोद्वः।।

इस तीर्थस्थान में सर्वप्रथम भैरवरूप शिव के दर्शन कर तदोपरालं देवी का दर्शन कराना चाहिये। देवी का मन्दिर लाल बलुआ पत्थर का बना है, जिसमें टेराकोटा का सुन्दर कार्य हुआ है।

9. शक्तिसंगमलन्त्र ३५५

2. Modified text of the pithamnayam as found in Manuscript No. 10863, entitled Pithanisnayam, in the Indian Museum collection of Royal Asiatic Society of Bengal. this text with that of the Sivachrita.

3. तन्त्रबूढामणि, महापीठनिरुपणमु शङ्करौ ७०

१६५
कर्तोयात्त शक्तिपीठ का स्थान निर्देशण:

कर्तोयात्त शक्तिपीठ प्राचीन बंगाल और कामरुप के सम्मिलन स्तर ९०० योजन विस्तुत शक्तित्रिक्रोण के अन्तर्गत है। यह स्थान बंगाल और 'बोगड़ा' जनपद के 'भवानीपुर' नामक ग्राम में स्थित है। बोगड़ा रेलवे-स्टेशन से भवानीपुर ३२ किलोमीटर की दूरी पर है। यह स्थान सनातन धर्मानुयायियों के लिए एक महान तीर्थ स्थान बन गया है।

कर्तोयात्त तीर्थ महात्मा:

कर्तोयात्त शक्तिपीठ के महात्मा का वर्णन करते हुए महर्षि वेदवास जी महाभारत में लिखते हैं कि जो मनुष्य कर्तोयात्त शक्तिपीठ में जाकर वहाँ पर कर्तोया नदी में स्नान कर तीन रात्रि उपवास करेगा, उसे अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होगा। -

कर्तोयां समासाय त्रिरात्रिपोषितो नरः।
अश्वमेधमवानोति प्रजापतिकृतो विधिः।।

कर्तोयात्त शक्तिपीठ सिंह केशर है। इस स्थान पर मनुष्यों के साथ-साथ देवता भी मृत्यु की इच्छा करते हैं -

कर्तोयां समासाय यावदिवक र्वासिनिमू।
शतयोजनवस्तीप्र त्रिक्रोण सवसिंहिदमॡ।
देवा भवानगिन्धृतिं किं पुनर्मानवायद्यः।।

9. नेपालस्य काणुचन्द्रांतः ब्राह्मुक्त्य पञ्चगमम्।
कर्तोयां समासाय यावदिवक र्वासिनिमू।।
उत्तराय नमुन्तिगिरुः कर्तोया तु परिचये।
तीर्थश्रेष्ठ दिशम पद्मवस्य विकल्पे के।।
दक्षिणेऽपि ब्राह्मुक्त्य लाश्या: सीढ़गमाविश।।
कामरुप दृश्य ज्ञात: सर्वशास्त्रस्य निर्धेतः।।
- शीताणितन्त्र, पटलें, पृष्ठ १८, श्लोक ९५-९६

२. महाभारत, बनपर्व, २५/३

२. Modified text of the Pithanarnaya as found in Manuscript No. 1086 (with slight emendation of the faulty language of the original) P. 238
इस केस्ट्र के घर-घर में देवी का निवास माना जाता है। स्वयं देवी का ही कथन है - “सर्वत्र विरला चाहे कामसूत्रे गृहे गृहे।” करतोयात्र तर भी काशी की तरह श्रीमणिकर्णिका मन्दिर है। इस मणिकर्णिका तीर्थ में भगवानु श्रीराम ने शिव-पार्वती के दर्शन किये थे -

पश्यनू स्थलानि सम्प्राय्य तपतां श्रीमणिकर्णिकामू।
करतोयानदीतोये स्तात्वास्रे न ययो विभुः।
भगवानु श्रीराम के अवस्थाधिक वज्र के अवस्था के करतोयात्र तर ही जाने का वर्णन प्राप्त होता है, जिससे यह लाल होता है कि उस समय भी इस शंकरपीठ की प्रतिष्ठा थी।

ययो वाजी वायुगत्य श्रीश्री ज्वालामुखों प्रति।
दौषभीत्या करतोयां तीर्था नैवायतो गतः।

करतोया नदी को ‘सदानीरा’ कहा जाता है। श्रावण ओर भाद्रपद मास में प्रावः नदियों का जल दृष्टिक होकर स्नान के योग्य नहीं रहता, परन्तु करतोया नदी तव भी पवित्र बनी रहती है। वायुपुराणं के अनुसार यह नदी ऋष्यार्थ्य से निकलती है और इसका जल मणिसदृश उज्ज्वल है। इस नदी को “श्रायस्त्रुप करोद्रव” भी कहा गया है। कहा जाता है कि इस करतोया नदी की उत्पत्ति शिव-पार्वती के पाणिग्रहण के समय शिव जी के हाथ पर डाले गये जल से हुई है, अत: इसको शिवनिमाल्यसदृश महत्ता है, इसका लघुन नहीं करना वालए।

9. योगिनी तन्त्र, द्वितीय भाग, पटल-६, स्लो० ९४०
10. आनन्दरामायण, यागकाण्ड, ६/२
11. आनन्दरामायण, यागकाण्ड २/३४
12. वायु पुराण, ७३/५४
13. करतोयात्रे तद्य वासे वायुपरीत्र:।
अप्यादिकत्त यत्र प्राक्राकोऽराम।
- तन्त्रधुर्द्रामणी, पीड्डितिकथा, स्लो० ४०
শ্রীরাম তীর্থপুর্ণ করতে হলো কর্তোয়া নদী তাক গবেষণা, পরন্তু উহাদের লিঙ্গনে দোপ জানাকর উস পার নাই গবেষণা।

যশোর শক্তিপীঠ :

যহ শক্তিপীঠ বাংলাদেশ কে ‘খুলনা’ জনপদ কে ‘জৈশোর’ নামক শহর মে হয়। যাহাঁ দেবীচেতে কে ‘বাম হয়েলি’ কে পতন হয় উহা যাহাঁ বিজাপুর বালি শক্তি কে নাম ‘যশোরঘোর’ হো একে ভবানী শিব ‘চন্দ্র’ ভেরো কে রূপ মে বিজাপুরৈল হয় –

যশোরঘোর পাণিপথাবৃদ্ধ দেবতা যশোরঘোর।
চণ্ডুরঘোর ভেরো হো যত্ন তত্ত্ব সিদ্ধির সংশয়।

চণ্ডুল শক্তিপীঠ :

যহ শক্তিপীঠ ভারতের মে চট্টগ্রাম সে কোটি সৌরী সৌরাঙ্গ স্টেশন কে সমীপ চন্দ্রশেখর পর্যায় পর ভবানী মন্দির কে রূপ মে রিহাত হয়। যাহাঁ দেবীচেতে কে ‘দক্ষিণ বাহু’ গিরি হী। যাহা কে শক্তি ‘ভবানী’ ও ভেরো ‘চন্দ্রশেখর’ হো –

চণ্ডুলে দক্ষিণ ভবানী ভবানী যত্ন দেবতা।

ইছ তীর্থস্থল পর ভবানী চন্দ্রশেখর শিব কে ভারত হো, জো সমুদ্র কে সাত সে লেগধে হো মো সৌরী হো পর স্থিত হয়। ইছ পবিত্র তীর্থস্থল পর সৌরাঙ্গ, ব্যাসকুণ্ড, সূর্যকুণ্ড, ব্রহ্মকুণ্ড, জনককোটিশাল, সাহসধারা, বাংককুণ্ড তত্তা লবণাক্ষতীর্থ হয়। বাংককুণ্ড মে নির্দেশ আগ নিকলতি রহতি হয়। জীসর কারণ ইছ স্থান পর প্রতিদি ভক্তো কে তাতা লাগ রহতি হয়।

7. কর্মনীয়শায়নদ্যাঃ কর্তোতাং যালিপ্তাস্তু।
গণ্ডাকোটাবটাসামাঙ্গ ধর্ম্ম: স্বতন্ত্র কীটনাথ।।
– আনন্দরামায়নায়, যাণ্ডো ৬:৩ ; যাণ্ডো ৩:৩৫

8. Yashora Pitha is located as Isvaripur (about 25 miles from the Massanabad Railway Station) in the Khulna District and not actually at Jessore.

9. চন্ডুলাচামাণি মহাপীঠনিপ্রাণমূ স্তোত্রো ৪৯

9. চন্ডুলাচামাণি মহাপীঠনিপ্রাণমূ স্তোত্রো ৯৭

১৬৮
सुगन्धा शक्तिपीठ :

यह शक्तिपीठ भी बंगालदेश में है। यहाँ पहुँचने हेतु ‘खुलना’ शहर से ‘बारीसाल’ तक स्टीमर द्वारा पहुँचा जाता है। ‘बारीसाल’ से 27 किमी उत्तर में ‘शिकारपुर’ ग्राम में ‘सुगन्धा’ या ‘सुनंदा’ नदी के तट पर ‘उग्रतारा’ देवी का मंदिर है। यहाँ देवीदेवी की ‘नासिका’ का पतन हुआ था। यहाँ की शक्ति ‘सुनंदा’ और भैरव ‘उम्बक’ है।

बंगालदेश के शक्तिपीठों का सामाजिक महत्व :-

बंगालदेश भारत के पश्चिम बंगाल का ही पूर्वी भाग था, जो इतिहास और समय में एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया है। अतः पश्चिम बंगाल की भारतीय शक्ति भी यहाँ भी शक्तिपीठ उपासना की परम्परा प्रचलित है। बंगालदेश के हिन्दू लोग भी पश्चिम बंगाल के हिन्दूओं की तरह माँ दुर्गा की पूजा-अर्चना, पूजा, अनुष्ठानादि का सम्पदन समय-समय पर करते रहते हैं। स्थानीय लोग तत्समस्विनिष्ठ शक्तिपीठ की देवी की कुलदेवी के रूप में मानते हैं। तथा विवाहित पति-पत्नी उससों पर देवी को अपनी वंश परम्परा के अनुसार भेंट बढ़ाने की प्रथा है। करतोयात्रा शक्तिपीठ में करतोया नदी पर स्नान करने के साथ चितु-तर्पण की परम्परा है। बंगालदेश के हिन्दूओं के लिए भारत में गढ़गड़ा नदी में स्नान-तर्पण करने के लिए आने हेतु भारत-बंगालदेश सीमा सम्बन्धी बाधा उपन न होती है, अतः यहाँ के हिन्दू अपने पूर्वजों के लिए तर्पण आदि किया एवं करतोयात्रा नदी में ही सम्पादित कर लेते हैं। करतोया नदी का शास्त्रों में अनेक प्रकार से वर्णन प्राप्त होता है।

यजोर, चढ़ूल और सुगन्धा शक्तिपीठ भी करतोयात्रा शक्तिपीठ की भारति बंगालदेश में सनातन हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु स्थानीय लोगों के प्रेरणा ब्रौज़ बने हुए हैं। इन

9. “सुगन्धायासुर नासिका।”
   - महानीतलद्वार, शलो ६२/३५

2. देवसर्वप्रात्युक्तरा सुनंदा तत्र देवता।
   - श्रीमण्डुराजमणि, श्रद्धार्थि-विधि, पीठनिर्णयः पाठल-४, शलो २८

3. सन ९५७२ ई में भारत-पाक युद्ध के परिणामस्वरूप बंगालदेश की स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापना हुई।
श्यामली जी के द्वारा लिखित यह उपन्यास का पहला अंश है। यह उनके लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनकी समाजसेवा का प्रबंधन करता है। यह उनकी समाजसेवा का प्रबंधन करता है।

1. गण्धकीयोग संस्कृति, पटल - ७४५
गण्डकी (कपोल) गिरा था। यहाँ की शक्ति गण्डकी के और भैरव 'चक्रपाणि' हैं -

गण्डक्यान् गण्डपालबुध तन्त्र सिद्धिर्म संस्थयः।
तन्त्र सा गण्डकी चण्डी चक्रपाणिस्तु भैरवः।

मुक्तिनाथ शालिग्राम क्षेत्र है। दानभंजार से गण्डकी के पुलिन पर और मार्ग के समीप
के पर्वत पर शालिग्राम शिला का मिलना प्रारम्भ हो जाता है। गण्डकी नदी का उद्गम स्थल
tो दामोदर कुण्ड है; किन्तु उसके किनारे जहाँ तक शालिग्राम पर्वत का विस्तार है, वह पूरा
क्षेत्र शालिग्राम-क्षेत्र है। इस क्षेत्र में शालिग्राम के अनेक रूप पाये जाते हैं। रंग, आकार, चक्र
तथा मुखादि के भेद से शालिग्राम शिला हरे, बिषुषु, कृष्ण, राम, नृसिंह आदि के रूप में
मानी जाती हैं। गण्डकी नदी को नारायणी या शालिग्रामी भी कहते हैं। मुक्तिनाथ के अन्तर्गत
nारायणी नदी में गरम पानी के साथ झरते हैं, इनमें से अमनकुण्ड नामक झरना एक पर्वत
से निकलता है। उसके उद्गम के पास पर्वत में अमन्वजालाएं दृष्टिगोचर होती है। मुक्तिनाथ
में 'गण्डकी' शक्तीपीठ के अतिरिक्त कई देवमन्दिर हैं जिनमें हरिहरग्रह, हंसतीरथ और
चक्रतीरथ मुख्य हैं। भगवानु श्रीहरि यहाँ पर्वतस्थ में और भगवानु श्रीकृष्ण वर्तियु स्वरूप भगवती
के साथ पर्वतस्थ लिङ्ग रूप में अवस्थित हैं। यहाँ की सारी शिलाएँ भगवतस्वरूप हैं, फिर
चक्राङ्कतो का तो पूजना ही क्या।

इस पवित्र स्थल पर देवीका, गण्डकी एवं चक्रा नदियों के संगम से त्रिवेणी बन गयी
है। राजपथ भरत ने भी राजपथ छोड़कर यहाँ तपस्या की थी। दूसरे जन्म में जब वे कालिंजर
में मृत हुए, उस समय भी अपनी माता तथा मृग-यूठ को छोड़कर मृगशयर से यहाँ आ
गये। वाराह पुराण के अनुसार किसी कल्प में गज-ग्रह का मुद्दा भी यहाँ हुआ था तथा

1. “गण्डकी गण्डपालबुध”
   - तन्त्रचूडमणि, शिवपालितसंबंध महापीठ निरुपणम्
2. “गण्डक्यान् गण्डकी चण्डी चक्रपाणिस्तु भैरवः।।
   - तन्त्रचूडमणि विषौलती, पीठनिर्णयम् ९५/६०
3. (क) श्रीभवचूडमणि भक्तसंकल्पाविवेर्ष पीठनिर्णयम्

(ख) गण्डकीते डाणि गण्ड पदेचक्राङ्क
चक्रपाणि भैरव गण्ड की चण्डी ताय।।

999
भगवान् ने सुदर्शन चक्र से प्राप्त का मुख विदीर्ण करके गजराज का उखार किया था। वहाँ जो प्राणी त्रिधार त्रिवेणी में स्नान करके देवता तथा पितरों का तर्पण करता है तथा माँ भगवती की शक्ति ‘गण्डकी’ तथा ‘चकपाणि’ भैरव के रूप में स्थित भगवानु श्रीकर की पूजा करता है, उसका पुनर्जन्म नहीं होता -

तीर्थ त्रिधारे व: स्नात्ता संतार्थ पितुदेवता।
महायोगिनमय्यच्छ्य न भूयो जन्मभागृ भवेवऽ।

‘गण्डकी’ शक्तिपीठ की यात्रा करने वालों को दो अच्छे कम्बल, कुछ मिश्री, काली मिर्च, थोड़ी खटाई, मोमबत्ती, टार्च, भोजन बनाने हेतु बर्तन साथ रखने चाहिए। मुक्तिनाथ तक चाल, ताल, आटा आदि मिलता रहेगा। मुक्तिनाथ से आगे दामोदरकुण्ड जाना ही तो 3-4 दिन के लिए चाल, इलायचि साथ ले जाना पड़ता है।

स्थान निर्देशन :

गण्डकी शक्तिपीठ काठमंडू से १६० मील की दूरी पर है। वहाँ जाने हेतु गोरखपुर से भी एक मार्ग है। गोरखपुर से रेल द्वारा ‘नौकर्य’ के बारे में सवाल नहीं आए होंगे। एवं ‘नौकर्य’ से मोटरगाड़ी द्वारा ‘भेरवाड़ा’ पहुँचकर हवाई जहाज के द्वारा ‘पोखरा’ जा सकते हैं। गोरखपुर से भेरवाड़ा तक मोटर–वाहन भी मिलती है। यदि हवाई जहाज द्वारा यात्रा न करनी हो तो गोरखपुर से भेरवाड़ा होते हुए “बुटवल” तक मोटरगाड़ी द्वारा जा सकते हैं। वहाँ से पेड़ल यात्रा पालना, बागलुंग से होकर करनी पड़ती है। इस मार्ग से मुक्तिनाथ तक पेड़ल ६४ मील चलना पड़ता है।

गण्डकी शक्तिपीठ की यात्रा चैत्र शुक्ल पक्ष से कार्तिक क्रुष्णिका तक की जा सकती है। और यदि दामोदर कुण्ड जाना हो तो इस तीर्थस्थान की यात्रा अगस्त-सितंबर में करना उपयुक्त होता है; क्योंकि जून-जुलाई में उधर वर्षा वा बर्फ के पिघलने के उपरान्त होते हैं। जून महीने से पहले वहाँ का मार्ग खुला नहीं रहता तथा सितंबर के उपरान्त हिमपात का भय रहता है।

9. बाराहपुराण ९६१/७२
नेपाल शक्तिपीठ :

नेपाल देश की राजधानी काठमाडू से दो मील की दूरी पर भगवान पशुपतिनाथ जी का विश्व प्रसिद्ध मंदिर है। पशुपतिनाथ मंदिर से ठोसी दूरी पर ‘बागमती’ नदी पड़ती है। नदी के उस पार भविती गुहाकेश्वरी देवी का प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। ये नेपाल राष्ट्र की अथिष्ठात्री देवी है। सारा नेपाल इन गुहाकलिका देवी की अनन्य भक्तिभाव से बनना करता है। नवरात्र में नेपाल के महाराज बागमती नदी में स्नान कर सपरिवार भविती गुहाकेश्वरी देवी के दर्शन करने जाते है तथा विधिरूपक भविती माँ का पूजन कर पूण्य के भागी बनते हैं। मंदिर में एक छिड्र है जिसमें से निरंतर जल प्रवाहित होता रहता है। यह गुहाकेश्वरी देवी का मंदिर ही शक्तिपीठ है। यहाँ देवीदेवी के दोनों जानु (धुंदने) गिरे थे। यहाँ की शक्ति “महामाया” तथा भेरव ‘कपाल’ हैं। जिनकी गणना अपनेंजावो में की जाती है।

यह शक्तिपीठ किरलेश्वर महादेव-मंदिर के समीप विराजमान है। यहाँ प्राचीनकाल में लेखमान्तवन था, जिसमें अरुण ने तपस्या की थी, केदारशिव भविती शिव किरल के रूप में जिस जंगल में विचरते रहे वह वन आज एक गाँव का रूप ले चुका है। कुछ भाग अब भी शेष है। काठमाडू शहर का हवाई अड्डा उसी वन्यागार में बना है। नेपाल शक्तिपीठ की यात्रा किसी भी समय की जा सकती है। केरल दिसम्बर-जनवरी में यहाँ अधिक शैतं पड़ता है। भारतीय यात्री प्राय: शिवरात्रि या नवरात्रि के अवसर पर ही जाते हैं।

9. “नेपाले गुहाकेश्वरी देवी”
   - त्रिपुरारवस्य, महावत्मुक्त ४८/७३

10. “नेपाले जानु मै शिव।”
    - चन्द्रचुंबारणित्व धृो ४२
    - तन्त्रचुंबारणि, पीडिनिर्गच, श्लो १०

11. (क) “कपालो भेरव: श्रीमानु महामाया च देवता।”
    - शिवरात्रि, पीडिनिर्गच, ७१

12. (ख) नेपाले दशि जड़ुगा कपाली भेरव।
    देवी तार महामाया सत्य भोजस्य।
    - अन्नधमृगभाला, पीडिमला - शरतचन्द्र बगवासी, पृ० ४५ (সংগঠিতা পুস্তক)

13. अर्णादुःक्रोहभूषण संहारामायान भेरव।
    कपालो भोजस्य संहारामायान भेरव।
    - तन्त्रसार: पृ० ३१४
गुढोश्वरी शक्तिपीठ में पहुँचने हेतु काठमण्डू से टेक्सी द्वारा गोशाला होते हुए बागमती नदी के किनारे तक जाकर पुल पार करने के उपरांत शक्तिपीठ तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। वहाँ जाने हेतु सिटीबस, टेक्सी इत्यादि सभी प्रकार के साधन उपलब्ध हैं। यह क्षेत्र साधकों को सिद्धि देने वाला है। शक्तिसंगम-तन्त्र में कहा गया है कि ‘जटेश्वर’ से प्रारम्भ कर ‘योगेश’ तक साधकों को सिद्धि प्रदान करने वाला नेपाल देश है –

जटेश्वर समार्थ्य योगेश्वान्त महेश्वरि।
नेपालदेशो देवेश्वरिः साधकानां सुसिद्धिः।।

इस पुण्य भूमि सिद्धीपीठ में इंद्रादि देवताओं ने आकर शक्ति की आराधना करते हुए कठोर तप किया। भगवती गुढोश्वरी ने प्रकट होकर देवताओं को वरदान दिया कि आप लोग सत्य, श्रद्धा, दान और कल्याण इन चारों युगों में तैनात करें। देवताओं के नाम से प्रसन्न होने। विश्व में आप लोगों की पूजा होगी तथा आप सभी आराधकों को इस्पत्ति प्रदान करे। इस प्रकार वरदान पाकर देवगण प्रसन्न होकर सद्विकार शक्ति की आराधना में रत रहते हुए स्वर्ग लोट आये।

नेपाल के शक्तिपीठों की सामाजिक उपायदेयता:

नेपाल में स्थित महामाया भगवती सती के अद्वैत द्वारा निर्मित ‘गण्डकी’ एवं ‘नेपाल’ शक्तिपीठ सामाजिक कार्यकलापों में सदैव अग्रणी है। ‘नेपाल’ या ‘गुढोश्वरी’ शक्तिपीठ में शरीर के किसी भी अद्वैत में विशेष गुणताड़ युग में कोई विकार हो जाने पर भगवती गुढोश्वरी के दर्शन करने, वहाँ पर पात्र करने या पण्डितों द्वारा पात्र करवाने से रोग से मुक्ति एवं सभी प्रकार की कामना पूर्ण होती है। शीतला के प्रकृति से तत्त्व व्यक्ति यहाँ आ कर बावली में स्नान करके देवी की पूजा करने से स्वस्थ हो जाते हैं। अतः इस प्रयोजन से भी इस शक्तिपीठ में देश-विदेश से भक्तगण अत्यन्त श्रद्धाभाव के साथ देवी के दर्शन-पूजन हेतु

४. शक्तिसंगममत्र, पतल ३, श्लो ४७
वहाँ पहुँचकर जो भी भक्त नर-नारी भगवती गुड़ोश्वरी का दर्शन-पूजन करते हैं, उनकी मनोकामना भगवती गुड़ोश्वरी अवश्य पूरा करती हैं। भगवती गुड़ोश्वरी शक्तिपीठ में यात्रियों के रहने हेतु आवास इत्यादि की सुविधा के लिये उपलब्ध होती है। काठमण्डू में भी धर्मशालाएँ हैं। शिवरात्रि तथा नवरात्रि के अवसर पर इस शक्तिपीठ में विशेष प्रकार के मेले इत्यादि का आयोजन किया जाता है। तथा दूर-दूर से देवीभक्त इन मेलों में भाग लेने एवं देवी-दर्शन के प्रयोजन से इस शक्तिपीठ में पहुँचते हैं। इन मेलों में स्थानीय लोगों का व्यवसाय के अनेक प्रकार के साधन उपलब्ध होते हैं।

भगवती गुड़ोश्वरी देवी सम्पूर्ण नेपाल की कुलदेवी हैं, अतः नेपालवासी अपनी वंशपरम्परा के अनुसार परिवारिक उत्सवों पर देवी गुड़ोश्वरी देवी को भेंट चढ़ाते हैं। विवाह के उपरात्र वर-वधु को देवी के दर्शन एवं पूजन करने का लाभ जाता है तथा वहाँ पर भोजन के भण्डारे इत्यादि का प्रवन्ध किया जाता है। नेपाल के लोग अपने चच्चों के मुण्डन-संस्कार भी इसी पृथ्वी-स्थल पर करते हैं। तथा भगवती माँ गुड़ोश्वरी देवी का आराधना प्राप्त करते हैं। नेपाल के महाराज भी प्रत्येक नवरात्रि में राजपरिवार सहित भगवती माँ के दर्शन हेतु गुड़ोश्वरी शक्तिपीठ में पहुँचकर माता जी का पूजन इत्यादि कार्य सम्पादित करने के उपरात्र शक्तिपीठ में प्रवन्धन इत्यादि कार्य का जायजा लेते हैं।

गण्डकी शक्तिपीठ शालिग्राम क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र में शालिग्राम के अनेक रूप पाये जाते हैं। गण्डकी नदी को शालिग्रामी नदी की संजा भी प्राप्त है। नेपाल एवं भारत के साथ-साथ पूरे विश्व के हिन्दू लोग इस तथ्य से शालिग्राम अपने-अपने घरों एवं देवालयों में ले जाकर भगवानु विषु का स्वरूप इन शालिग्राम शिलाओं का पूजन करते हैं। नेपाल के लोगों में यह धारणा है कि गण्डकी नदी के उद्गम स्थल दमोदरकुण्ड में सजीव एवं अत्यन्त प्रभावशाली शालिग्राम मिलते हैं, किन्तु अत्यन्त कठिन मार्ग तथा अत्यधिक शीतप्रदेश होने से यहाँ की यात्रा कम ही लोग करते हैं। गण्डकी नदी के विषय में यह मान्यता है कि इस नदी पर तैरने से मृत्यु के सारे प्राप्त हो जाते हैं, अतः इस नदी में तैरना विरक्त है। इस शक्तिपीठ में पिताओं का तर्पण इत्यादि करने की भी प्रथा प्रचलित है। लोग नदी में स्नान करने के पश्चात् अपने पिताओं का तर्पण-पूजन अद्यावधि किया-कलाप सम्पादित करते हैं। स्थानीय लोग इन कार्यकलापों के सम्बन्ध में यात्रियों का मार्गदर्शन करते हैं तथा यात्री उन्हें इसके बदले में जो कुछ धन इत्यादि देते हैं, उसी से उनकी आजीविका चलती है।
पाकिस्तान का हिंगुला शक्तिपीठ :

हिंगुला शक्तिपीठ भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान के بہووجीस्तान प्रान्त के 
लेवरी जनपद के अन्तर्गत हिंगलाज 
नामक स्थान में स्थित है। यहाँ हिंगुल 
पवित्र पर एक गुफा के भीतर जाने पर 
हिंगलाज देवी का पवित्र स्थल है, जहाँ 
शक्तिस्तूप ज्योति के दर्शन होते हैं। गुफा 
में हाथ-पैर के बल जाना पड़ता है। 
भगवान् विष्णु द्वारा भगवती सती के 
अड्डों के काटे जाने पर इस स्थान पर 
देवीदेह के “ब्रह्मरङ्ग्र” भाग का पतन हुआ था। यह स्थान प्राचीन समय में “हिंगुल” पवित 
के नाम से प्रसिद्ध था अतः भगवती सती का यह तीर्थस्थल “हिंगुला शक्तिपीठ” के नाम 
से विश्व-विख्यात हो गया। यहाँ की शक्ति “कोट्टरी” तथा भैरव “भीमलोचन” हैं - 
ब्रह्मरङ्ग्र हिंगुलायां भैरवो भीमलोचनः। 
कोट्टरी सा महामाया विष्णुण्य या दिगन्ती।।

हिंगुल का शब्दको प्रथा सिन्दूर होता है अतः ऐसी मान्यता है कि इस पवित्र धार्मिक 
स्थल पर भगवती सती के ब्रह्मरङ्ग्र भाग के साथ “सिन्दूर” का भी इस स्थान पर पतन हुआ 
था। मुस्लिम लोग इस तीर्थ को “नानी की हज” या “नानी का मन्दिर” के नाम से पुकारते 
हैं। इसका प्राचीन नाम ननाईया है जिसे फारसी में “अनविता” के नाम से जाना जाता है।।

9. हिंगुलाय ब्रह्मरङ्ग्र फेलिल केसब। 
   देवला कोट्टरी भीमलोचन भैरव।।
   – The Bengali version of the Pithnirnaya in the Pithmala section of the Annadamangala by – 
   Bharatchander Bangvavi, P - 45

2. पाण्डुलिपि संख्या ४०२, पीढ निर्णय, भसे २
   बंगाल राहित्य परिषद, कोलकाता।
मुस्लिम समाज के लोग भी अत्यधिक आदर भाव के साथ इस तीर्थ स्थान में दर्शनार्थ पढ़ाते हैं। सन 1947 में भारत का दो भागों में विभाजन हो जाने के कारण पाकिस्तान की अन्य स्वतंत्र देश के रूप में स्थापना हुई। अतः यह स्थान भारतीय लोगों के लिए वर्तमान क्षेत्र घोषित कर दिया गया। भारतीय देशी भक्तों को इस शक्तिपीठ में जाने हेतु दोनों देशों की सरकार से आवारा तैना पड़ता है। प्रत्येक वर्ष चेत्र महीने के अंतर्में इस शक्तिपीठ की यात्रा के लिए देश-विदेशों से देवीयक्ति एकत्रित होते हैं। भारत एवं पाकिस्तान के यात्रीयों के अतिरिक्त अमेरिका, इंग्लैंड, पश्चिमी अफ्रीका, बंगालियाँ, श्रीलंका, नेपाल तथा हिमालय आदि देशों से भी श्रद्धालु आकर इस शक्तिपीठ की यात्रा की श्रोभा को बढ़ाते हैं। यह यात्रा पाकिस्तान के कराची शहर में स्थित श्री स्वामीनारायण मंदिर परिसर से आरम्भ की जाती है। यहाँ पर यात्रियों के भोजन एवं आवास इत्यादि की सुचारू रूप से व्यवस्था की जाती है। यह यात्रा जम्मू-कश्मीर की श्रीमती नारायण यात्रा की भाक्षि अत्यधिक कठिन यात्रा है, जिसके 32 मुकाम हैं परन्तु वर्तमान में कराये और गवादर को मिलाने वाले राजमार्ग का निर्माण पूरा हो जाने के कारण यह यात्रा पहले की अपेक्षा अत्यधिक सुगम हो गयी है। इस राजमार्ग के बनने से इस यात्रा में पहले की अपेक्षा पिछले तीन वर्षों में यात्रियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है।

1. “मस्तीर्थ हिंगलाज” (बंगाली उपन्यास)
   - कलिकट अवधान

2. “Balochistan Diary” Out look India
   - By Tarun Vijay (March 20, 2006)
करना पड़ता है, जो अत्यन्त दुःख करता है। चन्द्रकूप पर प्रत्येक यात्री को अपने प्रच्छन्न पापों को जोर-जोर से कहकर उनके लिये क्यों माँगनी पड़ती है तथा भविष्य में न करने की शपथ लेनी होती है। प्रत्येक यात्री को एक तौंबे का सिकन्दा, एक नारियल एवं एक पेड़ का हरा पत्ता लेकर तालाब के जल में फेंकना होता है तदनंतर तालाब में से थोड़ा कीचड़ निकाल कर अपने कपड़ों पर लगाना शुभ माना जाता है। इस सरोवर पर चन्द्रवार को आना अशुभ माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि चन्द्रवार को इस सरोवर पर आने से वर्ष भर चेहरे से सम्बन्धित रोगों से आग्रह रहना पड़ता है।। रात भर इस चन्द्रकूप नामक पड़ाव पर ठहरकर यात्री दूसरे दिन प्रातःकाल में ही आगे की ओर प्रस्थान करते हैं। 93वें पड़ाव पर देवी हिंगलाज के दर्शन होते हैं। त्रेतायुग में भगवान् राम सीता एवं लक्ष्मण के साथ इस पवित्र धाम की यात्रा में आये थे। एवं श्रीराम जब रामण का नाम करके अयोध्या लौटे तो भी एक बार पुनः वे ब्रह्महत्या का पाप किया है ऐसे पुराणों में हिंगलापीठ की बड़ी महिमा बतायी गयी है। श्रीमद्वैद्वेश्वरवतु महापुराण में हिन्दू आत्मा है कि प्रत्येक दिन इमलय के पूजन पर देवी ने अपने प्रयोग स्थानों का पर्याय करते हुए हिंगुला शक्तिपीठ की “महास्थान” कहा है। इसी प्रकार ब्रह्मचारियों पुराण में कहा गया है वंश आर्यों में शुक्ल पक्ष की अष्टमी को हिंगुला शक्तिपीठ में श्रीमुण्डा जी की प्रतिमा का दर्शन-बूजन करते उपवास करने से पुनर्जन्म के कष्ट का निवारण हो जाता है।।

हिंगुला शक्तिपीठ का स्थान निर्देशन :

हिंगुला शक्तिपीठ पाकिस्तान में बलूचिस्तान प्रान्त के लेयरी जनपद के अन्तर्गत मकरान की पहाड़ियों में से एक हिंगुला नामक पड़ाव पर स्थित है। यह तीर्थ स्थान करारी

93. हिंगुला शक्तिपीठ स्थान, देश समाचार, 21-9-2011 विस्तार 8.03 बजे।
93. कालियों देवी गीत, पृ ६३।
93. “हिंगुला नामक स्थान” – श्रीमद्वैद्वेश्वरवतु महापुराण, ३०/१५।
93. ब्रह्मचारियों पुराण - ६३/४४।
से ९५० किलो मीटर दूर उत्तर-पश्चिम दिशा में हिंगुला या हिंगोल नदी के तट पर स्थित है, जो कि सिन्धु नदी के ढेल्टा से ९२० किलो मीटर एवं अरब सागर से २० किलो मीटर की दूरी पर है। हिंगुला शक्तिपीठ के साथ ही ६,१०० वर्ग किलो मीटर क्षेत्र में विस्तृत पाकिस्तान का विख्यात “हिंगोल राष्ट्रीय पार्क” भी स्थित है।

हिंगुला शक्तिपीठ की सामाजिक उपादेयता:

हिंगुला शक्तिपीठ की तत्त्वावधानित समाज को अत्यधिक योगदान है। पाकिस्तान के हिंदूओं के साथ-साथ मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग भी इस शक्तिपीठ के प्रति अत्यन्त श्रद्धाभाव से समर्पित हैं। मुस्लिम लोग इस शक्तिपीठ के तीर्थस्थल को “नानी की हज” तथा इसमें विराजने वाली देवी को “बीबी नानी” या “नानी” के नाम से सम्बोधित करते हैं जिसका प्राचीन नाम ‘ननाइया’ है एवं फारसी भाषा में इसे “अनहिता” के नाम से अभिहित किया जाता है। मुस्लिम लोग भगवती मां को लाल या केसरिया रंग का वस्त्र चढ़ाते हैं तथा मोमबत्तीयाँ जलाकर “नानी माँ” का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। मुस्लिम समुदाय के लोग “नानी माँ” को सिरिनी नामक मिश्रित दानकर भोग लगाते हैं तदन्तर इस “सिरिनी” नामक मिश्रित का माँ के प्रसाद के स्तों में भक्तों में बोंटा जाता है।

हिंदू शास्त्रों के अनुसार इस तीर्थस्थल में देवी सती का ब्रह्मरश्मि भाग गिरा था अतः समस्त विश्व के हिंदू सम्प्रदाय के लोगों की इस तीर्थस्थल के विषय में अत्यन्त श्रद्घा है। अतः इस शक्तिपीठ की देखरेख, वादा एवं व्यवस्था आदि कार्यों का सम्पादन पाकिस्तान के हिंदू-मुस्लिम लोग अत्यन्त श्रद्धा-भाव एवं सहयोगात्मक प्रवृत्ति से मिलजुल कर करते हैं।

2. ब्रह्मरश्मि हिंगुला मैरियो भीमलोचन।
कोहरी सा महामाया त्रिगुणा या दिगम्बरी।
- पाण्डुलिपि संख्या ४०२ए पीढ़ियाँ श्लोक ४,
अंगीय साहित्य परिषद् कोलकाता।
अतः कहा जा सकता है कि हिंदुगुला शक्तिपीठ हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक है। हिंदुगुला शक्तिपीठ एक महत्वपूर्ण हिन्दू तीर्थ है एवं हिंदुगुला देवी “क्षत्रीय भवसर” हिन्दू समुदाय की “बुलाई” भी है। अतः इस समुदाय के लोग अपने बच्चों के मुख्य संस्कार एवं अन्य कुलपरम्पराओं का सम्पादन इस शक्तिपीठ धाम में बड़े हैरानियों के साथ करते हैं।

पाकिस्तान के हिन्दू लोग विवाहीपरात वर-वधू को देवी के दर्शन-पूजन करवाने हेतु अपने सम्बन्धियों सहित इस पवित्र तीर्थस्थल पर लाते हैं तथा अपने समर्थक अनुसार देवी के दरबार में भंडारी इत्यादि का आयोजन किया जाता है एवं अपनी कुलपरम्परा के अनुसार देवी को भोज चढ़ाई जाती है। यह भुविगूला देवी के मनाने के लिए देवी की प्रतिमा पर सिंधूर बनाती है, उनकी मान्यता है कि ऐसा करने पर माँ भज्जती उन्हें सदा सुहागन रहने का आश्वासन प्रदान करती है। सिंधूर के साथ-साथ माँ की प्रतिमा पर सुहाग की पिठा बनाने की भी प्रथा प्रचालित है। हिंदुगुला शक्तिपीठ के बलबिक्षानात्र्य के मनुष्यत्व में अवस्थित होने के कारण इसे “मस्तीर्थ हिंगलाज” का संज्ञा दे भी आमदेखियाँ किया जाता है।

“मस्तीर्थ हिंगलाज” का लिखा गया बंगाली उपन्यास भी है, जिसमें माँ भज्जती की हिंगलाज वाटा एवं भेरव “भीमलोचन” के स्थान कोटेश्वर वाटा का वर्णन किया गया है। इस उपन्यास में मानव के वास्तविक जीवन में घटित होने वाली छोटी-बड़ी घटनाओं का अत्यन्त मामलिक विवरण किया गया है। इस उपन्यास पर आधारित एक अति सफलतम बंगाली फिल्म का भी निर्माण किया गया है, जिसका नाम भी “मस्तीर्थ हिंगलाज” हो था।

हिंदुगुला शक्तिपीठ में अनेक प्रकार के रोगों का उपचार किया जाता है, माँ के पावन धाम की शक्ति (मिष्टान्न) सर्पदंश पर लगाने से विष का असर समाप्त भोकता है। अतः इस योग्य के सन्दर्भ में देवीस्थान के शक्तर लाल व्रतन में बैठक कर अपने-अपने घरों में ले जाते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर माँ हिंदुगुला का स्मरण करके उसका सेवन करते हैं।

9. “Balochistan Diary” Out look India
   – By Tarun Vijay (March 20,. 2006)

2. “मस्तीर्थ हिंगलाज” (बंगाली उपन्यास)
   – कलकनद्य अवधार
हिंगुला शक्तिपीठ की यात्रा के समय अनेक स्थानों पर निःशुल्क उपचार केन्द्र लगाये जाते हैं, जिनमें यात्रियों का निःशुल्क उपचार किया जाता है। तथा अनेक स्थानों पर यात्रियों के भोजन इत्यादि की व्यवस्था भी की जाती है।

हिन्दू भक्तगण माँ दुर्गा के मंदिर में तीन नारियल बढाकर मन्त्र माँगते हैं तथा मन्त्र पूरी होने पर पुनः तीन नारियल बढ़ाने की प्रथा प्रचलित है। समस्त पाकिस्तान से हिन्दू लोग लाल रंग की ध्वाजा हाथ में लिये, सिर पर सुनहरी या केसरिया रंग की पट्टी बैठे इस परम पवित्र माँ भगवती सती के अंग द्वारा निर्मित शक्तिपीठ में माँ भगवती का दर्शन पूजन करने हेतु पधारते हैं। पाकिस्तान के सिर्फ प्रान्त से आने वाले भक्तों की संख्या अन्य की तुलना में सबसे अधिक होती है। हिंगुला शक्तिपीठ में आने वाले यात्रियों की संख्या निम्नलिखित तालिका संरचना के द्वारा दर्शायी जा रही है -

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र॰सं.</th>
<th>स्थान</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>बलुचिस्तान</td>
<td>8%</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>पंजाब</td>
<td>3%</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>सिस्थ</td>
<td>8.9%</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>विदेश</td>
<td>2%</td>
</tr>
</tbody>
</table>

माँ हिंगुला की अनुकम्पा एवं आशीर्वाद द्वारा पाकिस्तान सरकार ने करारी से व्यापार को जोड़ने वाला राष्ट्रीय मार्ग तैयार करवा दिया है अतः माँ के शक्तिपीठ की यात्रा पहले से अधिक सुगम एवं सरल हो गयी है, जिसके कारण इस शक्तिपीठ में विस्तृत तीन वर्षों


2. “Balochistan Diary” Out look India
   – By Tarun Vijay (March 20., 2006)
वर्ष २००४ एवं २००५ में सुरुवात कारणों को ध्यान में रखते हुए यात्रा को रद्द करना पड़ा। यात्रा के समूह रास्ते में स्थान-स्थान पर स्थानीय लोगों के द्वारा दुकानें लगायी जाती हैं, जिनमें यात्रियों की सुविधा का सामान उपलब्ध रहता है। इस प्रकार स्थानीय लोगों को व्यवसाय के अनेक साधन उपलब्ध होते हैं।

बच्चो का स्वर्ग:

हिन्दू बच्चो के लिए तो हिंगुला शक्तिपीठ स्वर्ग के समान है। विशेषकर थारी हिन्दू बच्चो के लिए जो कि समूह वर्ष में कृपया एवं बंधुआ मज़ूरी करते हैं, उनके लिए यह शक्तिपीठ स्वर्ग से भी बढ़कर है। ये बच्चे इस शक्तिपीठ की यात्रा के समय इस स्थान पर अधिक से अधिक समय व्यतीत करते हैं।

हिंगोल नदी:

भारत में जो महत्व गंगा स्नान से प्राप्त होता है, वही महत्व पाकिस्तान में हिंगोल नदी में स्नान करने से प्राप्त हो जाता है। देवी भक्तों की ऐसी मांगता है कि हिंगुला शक्तिपीठ के दर्शन-पूजन करने से पूर्व हिंगोल नदी में स्नान करना आवश्यक होता है। हिंगोल नदी में यात्री अपने पूर्वजों के निमित्त तर्पण इत्यादि कियाएँ का भी सम्पादन करते है। विधवा स्त्रियां हिंगोल नदी पर अपने केश कटवा देती हैं एवं जब उनके केश पहले की तरह पुनः लम्बे हो जाते हैं तो वे स्त्रियां दूसरा विवाह कर सकती हैं ऐसी तत्समविधित समाज की मान्यता है।

हिंगोल राष्ट्रीय पार्क:

हिंगुला शक्तिपीठ के साथ ही पाकिस्तान का विशाल हिंगोल राष्ट्रीय पार्क स्थित है, जहाँ पर वन्य जीवों के संरक्षण की विशेष ध्येयता है। सन 2006 में इस राष्ट्रीय पार्क में माता हिंगुला देवी के नाम से एक भव्य पत्थरविद्वासी समारोह का आयोजन किया गया था। जिसका शीर्षक इस प्रकार था -

SOCIO-ECOLOGICAL AND ECONOMIC IMPACT OF HINGLAJ MATA FESTIVAL
ON HINGOL NATIONAL PARK AND ITS RESOURCES - April 9-13-2006

9.
BBC News / In Pictures : Hindus in Pakistan

2.
Shaktipeeth.com  Dated 22-9-2011

983
पञ्चसागर शक्तिपीठः

इस शक्तिपीठ के स्थान का निष्क्षिप्त पता नहीं है। यहाँ देवीदेव ने अघोदात्र गिरे थे। यहाँ की शक्ति ‘वाराही’ एवं भैरव ‘महारूप’ नाम से जाने जाते हैं।

श्रीलड़का का लड़का शक्तिपीठः

लड़का शक्तिपीठ में देवीदेव का ‘नुपुर’ गिरा था। यहाँ की शक्ति ‘इन्द्राशी’ तथा भगवान् शिव ‘राक्षसेश्वर’ भैरव के रूप में विराजमान हैं।

लड़कायां नूपुरचैव भैरवो राक्षसेश्वरः।
इन्द्राशी देवता तन्न इन्द्रीणोपासित पुरा।

लड़का शक्तिपीठ के विषय में स्पष्ट रूप से ज्ञान नहीं हुआ है कि इस शक्तिपीठ का निष्क्षिप्त स्थान कहाँ है। यदि हम पौराणिक लड़का में इस शक्तिपीठ की मानने तो

(b) लारानाथ लक्ष्मीचन्द्रसिंहलारामस्वामी, मृदु - ४७३
(c) Manuscript entitled Pithanirnaya in the collection of Mr. S.K. Samrswati of the Calcutta University. This manuscript, collected from Rajashahi, was copied about the second quarter of the eighteenth century.
(d) Manuscript no. 402 (Sanskrit) entitled Pithanirnaya in the collection of the Vangiya Sahitya Parishad, Calcutta; copied on the 14th Bhadra, Saka 1760 (a838 A.D.) and B.C. 1245.

8. (क) “अघोदात्रो महारूपो वाराही पञ्चसागरे॥”
- तन्त्रचूडामणि, शिवपार्वती समवादे एक पञ्चचातुर्विधोत्तासी पीठ निर्मित, श्लोि ३६
(ख) पञ्चसागरे पड़े अघोदात्र सार।
महारूप भैरव वाराही देवी ताल।।

– The Bengali version of the Pithanirnaya (Mahapithanirupan) in the Pithmala section of the Annadamangala by Bharata Chandra, Vangvasi, P. No. 46

3. तन्त्रचूडामणि विद्योत्तासी पीठनिर्मित, श्लोि ५४
आदिकाल्य रामायण के अनुसार लक्ष्मण का एक उपमहाद्वीप है, जो भारत की दक्षिणी सीमा से 900 योजन अर्थात् 1300 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, लेकिन इस तरह का कोई भी स्थान वर्तमान समय में उपलब्ध नहीं है। कुछ विद्वानों के अनुसार वर्तमान श्रीलक्ष्मण के जगन्नाथ जनपद के अन्तर्गत त्रिकोणमाली शहर के त्रिकोणेश्वर स्वामी मन्दिर के समीप “शंकरी देवी” के मन्दिर को ही भगवती सती के शक्तिपीठ के रूप में मान्यता प्राप्त है। भगवान शंकराचार्य इस शक्तिपीठ की गणना अपराधशक्तियों में करते हैं। शंकरी देवी का वास्तविक मन्दिर प्राचीन समय में पुर्त्तालियों के द्वारा नष्ट कर दिया गया था, लेकिन भगवती की कृपा से मन्दिर की पुनः स्थापना की गयी है।

7. “लक्ष्मण शंकरी देवी।”
   - शंकराचार्य निरुपित अन्त्यादासानपूर्ण

2. www.sunkeridevi.com Dated - Nov 03, 2011 Time - 7:34 p.m.